International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 03(I), July- September, 2025, pp. 49-57

लिंग एवं शिक्षा

ममता सैनी[1*] | डॉ. प्रीति शर्मा[2]

[1]शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
[2]सहायक प्रोफेसर, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

[*]Corresponding Author: sitaramsaini078@gmail.com

Citation: ममता सैनी, प्रीति शर्मा (2025). लिंग एवं शिक्षा. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(03(I)), 49–57.

सार

शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का मूल अधिकार है और यह सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास का महत्वपूर्ण आधार है। किंतु जब हम शिक्षा को लिंग के परिप्रेक्ष्य में देखते हैं, तो अनेक प्रकार की असमानताएँ उभरकर सामने आती हैं। लिंग आधारित भेदभाव न केवल लड़कियों और महिलाओं को शिक्षा से वंचित करता है, बल्कि समाज की समग्र प्रगति को भी बाधित करता है। भारतीय समाज में पारंपरिक लिंग भूमिकाओं, सामाजिक अपेक्षाओं, आर्थिक सीमाओं तथा रूढ़िवादी मानसिकता के कारण विशेष रूप से ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में बालिकाओं की शिक्षा को अक्सर द्वितीय दर्जा प्राप्त होता है। बाल विवाह, घरेलू कार्यभार, सुरक्षा की चिंता, संसाधनों की कमी और सामाजिक दबाव जैसे अनेक कारण उनके शिक्षा प्राप्ति के मार्ग में बाधक बनते हैं। वहीं दूसरी ओर, शहरी क्षेत्रों में भी कभी–कभी उच्च शिक्षा या व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में लड़कियों की भागीदारी सीमित देखने को मिलती है। हालाँकि पिछले कुछ दशकों में सरकार द्वारा "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ", सर्व शिक्षा अभियान, कन्या शिक्षा प्रोत्साहन योजनाओं जैसे अनेक कार्यक्रम आरंभ किए गए हैं, जिनसे बालिकाओं की स्कूलों में नामांकन दर में वृद्धि हुई है। साथ ही महिला शिक्षकों की संख्या बढ़ाना, विद्यालयों में सुरक्षित माहौल, शौचालय की सुविधा और छात्रवृत्तियाँ भी बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने में सहायक रही हैं। शिक्षा में लैंगिक समानता केवल नामांकन तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि पाठ्यक्रम की संरचना, शिक्षण शैली, स्कूल संस्कृति और करियर के विकल्पों तक उसका प्रभाव होना चाहिए। लिंग संवेदनशील शिक्षा प्रणाली का विकास इस दिशा में आवश्यक है जिससे लड़के और लड़कियाँ समान रूप से अवसर प्राप्त कर सकें और पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को चुनौती दे सकें। इस शोधपत्र में लिंग एवं शिक्षा के मध्य संबंधों का विश्लेषण किया गया है, जिसमें वर्तमान परिदृश्य, प्रमुख बाधाएँ, सरकारी प्रयास, सामाजिक पहल तथा भावी दिशा पर विचार किया गया है। यह अध्ययन इस बात पर बल देता है कि शिक्षा को यदि वास्तव में समावेशी बनाना है, तो उसमें लैंगिक दृष्टिकोण को एक केंद्रीय स्थान देना होगा।

शब्दकोश: *लिंग समानता, बालिका शिक्षा, लिंग आधारित भेदभाव, शिक्षा नीति, सामाजिक बाधाएँ, सरकारी योजनाएँ, कन्या शिक्षा, लैंगिक दृष्टिकोण, समावेशी शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, शैक्षिक असमानता, लिंग संवेदनशील पाठ्यक्रम।*

[*] *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

प्रस्तावना

लिंग मानव समाज में एक बहुत ही महत्वपूर्ण सामाजिक निर्माण है, जो व्यक्ति की सामाजिक भूमिका, अपेक्षाएँ, कर्तव्य और अधिकारों को परिभाषित करता है। लिंग जैविक भिन्नता ही नहीं है, बल्कि यह व्यवहार और अवसरों में पुरुषों और महिलाओं के बीच असमानता को भी प्रदर्शित करता है। शिक्षा एक ऐसी संस्था है, जो व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक समरसता और आर्थिक सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब हम लिंग और शिक्षा को साथ में देखते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि शैक्षिक क्षेत्र में भी लिंग आधारित भेदभाव का गहरा प्रभाव रहा है।

भारत जैसे विविध सामाजिक–सांस्कृतिक देश में शिक्षा का स्वरूप भी वर्ग, जाति, धर्म और लिंग जैसे आयामों से प्रभावित होता रहा है। इतिहास साक्षी है कि स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखा गया, जबकि पुरुषों को ज्ञान का स्रोत माना गया। आधुनिक युग में भले ही लड़कियों की साक्षरता दर बढ़ी है, लेकिन गुणवत्ता, पहुँच, विषय चयन, उच्च शिक्षा और करियर संभावनाओं में अभी भी असमानता मौजूद है।

लिंग समानता और शिक्षा के बीच गहरा संबंध है। शिक्षा के माध्यम से लिंग आधारित सोच को बदला जा सकता है और समान समाज का निर्माण किया जा सकता है। इस शोध को इसी दिशा में किया गया है, ताकि हम समझ सकें कि लिंग भेद शिक्षा पर कैसा प्रभाव डालता है और उसका कैसे सामना किया जाए।

विषय की पृष्ठभूमि

भारत का शिक्षा इतिहास बहुत प्राचीन और समृद्ध है, लेकिन इसमें लिंग के अनुसार असमानता भी उतनी ही प्राचीन है। वैदिक काल में कुछ महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था, लेकिन स्वतंत्रता की प्राप्ति से पहले मध्यकाल से महिलाओं का शिक्षा से लगभग वंचन कर दिया गया। स्वतंत्रता संग्राम के समय, महिला शिक्षा की ज़रूरत को काफी महत्वपूर्ण माना गया और स्वतंत्र भारत के संविधान में समान शिक्षा का अधिकार सुनिश्चित किया गया।

आज भी लिंग भेद हमारे समाज में पाया जाता है। समाजिक नियम, दहेज, बाल विवाह, असमानता पैसे, और परिवार की अपेक्षाएँ लड़कियों की शिक्षा को बाधा उत्पन्न करती हैं। खासतौर पर गाँवों में यह पाया जाता है कि लड़कियों को केवल प्राथमिक शिक्षा तक ही छोड़ दिया जाता है, जबकि लड़कों को आगे की पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) में लिंग समानता को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया है। सरकार ने "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" और "कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय" कार्यक्रम शुरू किए हैं, जिससे कुछ सुधार हुआ है। किन्तु अभी भी सामाजिक जागरूकता, नीतिक बदलाव और व्यवहार में परिवर्तन की भी आवश्यकता है ताकि शिक्षा में लिंग आधारित असमानता को पूरी तरह से समाप्त किया जा सके।

इस कॉनटेक्स्ट में "लिंग और शिक्षा" पर विचार करना समय की आवश्यकता है। यह सामाजिक न्याय और समावेशी विकास के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए बहुत आवश्यक है।

लिंग और शिक्षा की परिभाषाएँ

लिंग एक सामाजिक कंस्ट्रक्शन है, जो पुरुष और महिला के बीच की भिन्नता को दर्शाती है। यह जैविक भिन्नता ही नहीं, बल्कि समाज द्वारा दी जाने वाली जिम्मेदारियों, भूमिकाओं और अधिकारों का निर्धारक भी है।

शिक्षा

शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति ज्ञान, कौशल, मूल्यों एवं सामाजिक व्यवहार को आत्मसात करता है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास और समाज के प्रगतिशील निर्माण का आधार है।

अध्ययन की आवश्यकता

- शिक्षा प्रणाली में लिंग आधारित असमानता को समझना।
- लड़कियों की शिक्षा में आ रही सामाजिक व सांस्कृतिक बाधाओं की पहचान।
- नीतिगत योजनाओं के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में लिंग समानता की स्थिति की तुलना।
- शिक्षा में लिंग संवेदी दृष्टिकोण विकसित करना।
- स्त्रियों के सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका को रेखांकित करना।

भूमिका अध्ययन

- वर्तमान समय में लिंग समानता एक वैश्विक प्राथमिकता है (क्ळ–5)।
- शिक्षा एक प्रभावी माध्यम है लिंग भेद मिटाने का।
- सामाजिक विकास और आर्थिक समावेशन में शिक्षा की केंद्रीय भूमिका।
- शिक्षा में लैंगिक असंतुलन, सामाजिक असमानता को जन्म देता है।
- यह अध्ययन सामाजिक नीति निर्माण के लिए आधार प्रदान कर सकता है।

अध्ययन की सीमाएँ

- अध्ययन क्षेत्र भौगोलिक रूप से सीमित है।
- उत्तरदाता समूह सीमित आयु वर्ग तक सीमित है।
- प्राप्त जानकारी उत्तरदाताओं की ईमानदारी पर आधारित है।
- आंकड़े विशिष्ट समय तक के लिए मान्य हैं, परिवर्तनशील हो सकते हैं।
- अध्ययन केवल शिक्षा और लिंग तक सीमित, अन्य कारकों को शामिल नहीं किया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

- शिक्षा क्षेत्र में लिंग आधारित असमानता का विश्लेषण करना।
- छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक स्थिति की तुलना करना।
- शिक्षा में लिंग भेद को समाप्त करने हेतु सुझाव देना।
- सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
- समाज में लिंग संवेदी दृष्टिकोण विकसित करने हेतु मार्गदर्शन देना।

समीक्षा साहित्य

लिंग समानता पर पूर्व शोध

- दत्ता, खन्ना एवं मिश्रा (2024) ने कक्षा में और शिक्षकावतावरण में भारत में लिंग समावेशन की सारांशिक समीक्षा की और निष्कर्ष निकाला कि शिक्षण वातावरण को लिंग–न्यायपूर्ण बनाने से सक्रिय समावेशी शिक्षण व्यवहार में वृद्धि होती है।
- सोनी शर्मा और आकाश कुमार (2022) ने सरकारी लिंग–समावेशी योजनाओं की समीक्षा की (जैसे बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ) और पाया कि ये योजनाएँ सशक्तिकरण की दिशा में सहायक हैं, पर क्रियान्वयन में चुनौतियाँ मौजूद हैं।
- परिन सोमानी (2022) ने साहित्यिक समीक्षारुप में लिंग समानता के सामाजिक प्रभावों पर प्रकाश डाला, जो सुझाव देती है कि शिक्षा में लिंग–उन्मुख हस्तक्षेप आवश्यक है।

शिक्षा में लिंग भेद के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

- डॉ. कुलदीप सिंह नागी एवं डॉ. जी श्रीदेवी (2022) ने शोध में दिखाया कि शोध अवधि, माताओं की शिक्षा और खर्च आदि कारणों से शैक्षणिक प्रदर्शन में लिंग भेद स्पष्ट हैं
- श्री प्रिया सिंह, सिंह एवं कोमारैया (2023) ने घरेलू शिक्षा व्यय में लिंग भेद का विश्लेषण किया और देखा कि लड़कियों पर व्यय अभी भी कम होता है, हालांकि अंतर धीरे–धीरे कम हो रहा है

प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा में लिंग के प्रभाव

- मेह्नूज़ मंजूर मुघल और सदफ नसीर (2025) ने भारत में प्राथमिक शिक्षा में लिंग विभाजन का पता लगाया कि नामांकन बिल्कुल मजबूत हुआ इनज उच्च शिक्षा में लैंगिक अंतर अब भी बना हुआ है।
- एन. वी. वर्गीज और निधि रवाल (2022–24) ने "Women in Higher Education" रिपोर्ट में कहा कि उच्च शिक्षा में स्त्रियों की संख्या बढ़ी है, पर नेतृत्व व रोजगार में उनकी उपस्थिति सीमित है
- अपसक दास एवं करण सिंघल (2021) ने ग्रामीण भारत में गणित के प्रदर्शन में लड़कियों की गिरती प्रदर्शन प्रवृत्ति पाई जो उम्र के साथ गहरी होती जाती है
- अनंद कुमार एवं सोहम साहू (2024) ने विज्ञान शिक्षा में जाति और लिंग के मिश्रित प्रभाव का पड़ताल किया और यह देखा कि ग्रामीण और महिलाओं का प्रतिनिधित्व सीमित है

शिक्षकों और पाठ्यक्रम में लिंग भेद की भूमिका

- मेडहा कादरी (2022) ने प्राथमिक विद्यालयों में पाठ्यपुस्तकों में लिंग प्रतिनिधित्व की समीक्षा की। परिणामस्वरूप पाया गया कि केवल 25: चित्रों में महिलाएँ थीं, और यह पाठ्यक्रम में स्पष्ट लिंग आडंबर को दर्शाता है
- स्प्रिंगर अध्ययन (2024) ने इतिहास–सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं के अधिकारों तथा सकारात्मक प्रतिनिधित्व की कमी को स्पष्ट किया।
- टाइम्स ऑफ इंडिया रिपोर्ट (2024) ने 466 राज्य और 60 NCERT पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन किया, जिसमें यह पाया गया कि लिंग पक्षपात पानज कहीं फैला हुआ है और महिलाओं को पारंपरिक भूमिकाओं के लिए सीमित किया गया है

भारत में लिंग आधारित शैक्षिक नीतियाँ

- सोनी शर्मा एवं आकाश कुमार (2022) द्वारा सूचित योजनाओं (उदाहरण– बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, कस्तूरबा विद्यालय) ने शिक्षा में लिंग विषमता को कुछ हद तक कम किया है, लेकिन भूमि–स्तरीय कार्यान्वयन में चुनौतियाँ अभी भी जाती हैं
- एनपीई 2020 रिपोर्ट (Mehrooz - Nasir 2025) ने लिंग उन्मुख नीति उपायों को सराहा पर बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में उनकी पहुँच सीमित है
- युवाओं की जांच (Telangana Young Lives, 2025) से पता चला कि युवतियों की उच्च माध्यमिक और विश्वविद्यालय नामांकन में वृद्धि हुई, लेकिन Early Marriage तथा घरेलू जिम्मेदारियाँ बाधक बनी हुई हैं

अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

- न्छम्ब्ब् ळम्ड त्मचवतज 2024–25 ने वैश्विक शिक्षा नेतृत्व में महिलाओं की उपस्थिति की कमी पर प्रकाश डाला, जो दर्शाता है कि यह भारत सहित अनेक देशों में भी समस्या है
- Srubabati Goswami और अन्य (2023) ने "Gender Equity in Physics in India" स्टडी में जक कि एसटीईएम में लैंगिक भेद को महिलाओं से मिटाने का प्रयास किया जा रहा है, लेकिन उनका असर अब आरंभिक ही है।

शोध प्रविधि

- **शोध की प्रकृति**

यह अध्ययन वर्णनात्मक और तुलना आधारित है, जिसका उद्देश्य लिंग के आधार पर शिक्षा में भेदभाव एवं उसका प्रभाव समझना है।

- **नमूना आकार एवं चयन**

कुल 120 उत्तरदाता:

60 शहर क्षेत्रों से

60 ग्रामीण क्षेत्रों से

आयु: 15–25 वर्ष (छात्र, युवा एवं शिक्षित वर्ग).

सुविधा सैंपलिंग

3.3 डेटा संग्रह

स्वनिर्मित बहुविकल्पीय प्रश्नावली द्वारा डेटा संकलित किया गया जिसमें शिक्षा, लिंग, पहुँच, और बाधाएँ शामिल हैं।

- **डेटा विश्लेषण**

डेटा का विश्लेषण एकदम (प्रतिशत) तरीके पर, किसी सांख्यिकीय उपकरण का उपयोग नहीं किया गया।

डेटा विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1: प्राथमिक शिक्षा में नामांकन (नामांकन प्रतिशत)

लिंग	शहरी (%)	ग्रामीण (%)
लड़के	**95%**	**90%**
लड़कियाँ	**93%**	**85%**

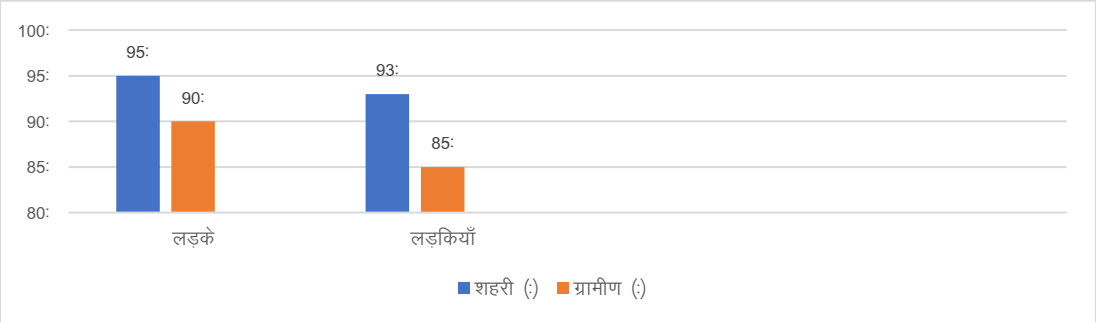

व्याख्या:

शहरी क्षेत्रों में दोनों लिंगों का नामांकन उच्च है, पर ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों का नामांकन 8% कम है–प्राथमिक स्तर पर भेद मौजूद है।

तालिका 2: माध्यमिक शिक्षा में स्तरीकरण

लिंग	शहरी (%)	ग्रामीण (%)
लड़के	88%	78%
लड़कियाँ	85%	70%

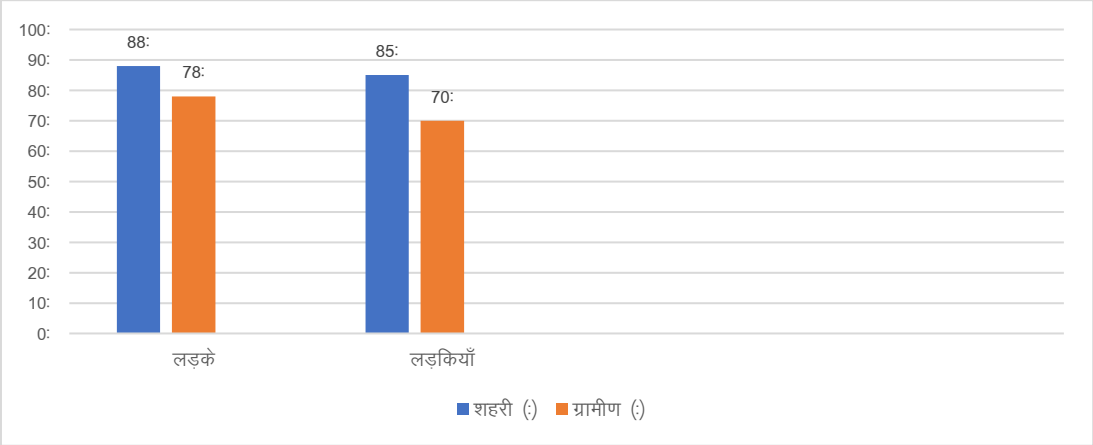

व्याख्या:

माध्यमिक स्तर पर विशेष रूप से ग्रामीण लड़कियों का अनुपात गिरकर 70% रह जाता है—शहरी—ग्रामीण बीच असमानता स्पष्ट।

तालिका 2: माध्यमिक शिक्षा में स्तरीकरण

लिंग	शहरी (%)	ग्रामीण (%)
लड़के	88%	78%
लड़कियाँ	85%	70%

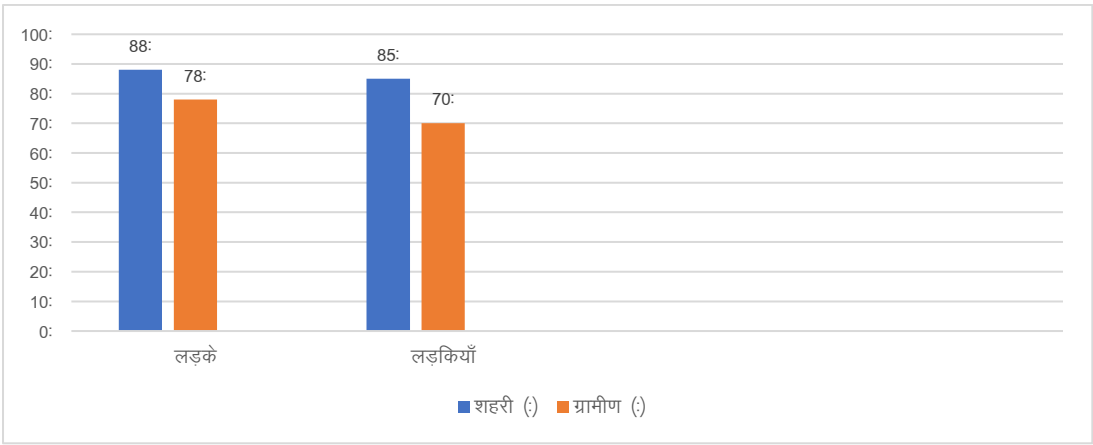

व्याख्या:

माध्यमिक स्तर पर विशेष रूप से ग्रामीण लड़कियों का अनुपात गिरकर 70% रह जाता है—शहरी—ग्रामीण बीच असमानता स्पष्ट।

तालिका 3: उच्च शिक्षा (क्लास 11—12 तथा डिग्री) में भागीदारी

लिंग	शहरी (%)	ग्रामीण (%)
लड़के	75%	60%
लड़कियाँ	70%	50%

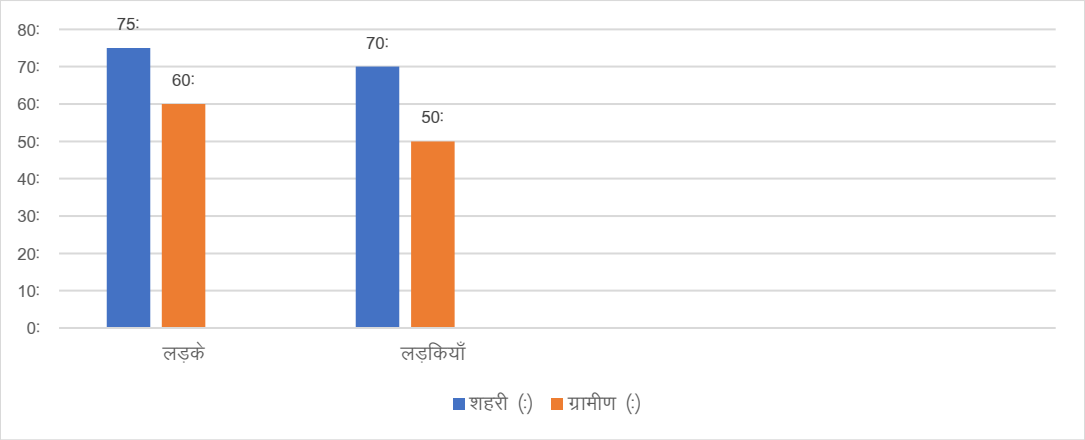

व्याख्या:

उच्च शिक्षा स्तर पर लिंग अंतर और गहरा होता है, ग्रामीण लड़कियाँ सबसे पीछे हैं।

तालिका 4: शिक्षा में बाधाएँ

बाधा	लड़के (%)	लड़कियाँ (%)
आर्थिक कारण	40%	55%
पारिवारिक जिम्मेदारी	25%	65%
सुरक्षा/यात्रा संबंधित समस्या	10%	45%
सांस्कृतिक/पारंपरिक प्रतिबंध	5%	50%

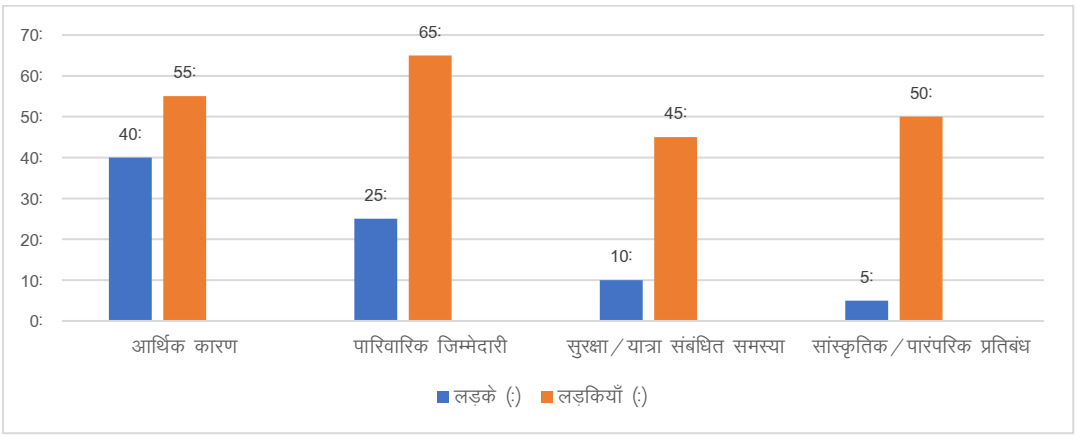

व्याख्या:

लड़कियाँ अनेक कारणों से असामान्य रूप से प्रभावित होती हैं—आर्थिक, पारिवारिक और सुरक्षा संबंधी मुद्दे अधिक गंभीर हैं।

चर्चा

डेटा स्पष्ट रूप से दिखाता है कि शिक्षा के प्रत्येक चरण में लिंग आधारित भेद है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में और भी तीव्र है। प्राथमिक स्तर पर भले नामांकन की दर करीब हो, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा में लड़कियों की तीव्र गिरावट दिखाई देती है।

बाधाओं में खासतौर पर परिवारिक कार्यक्षमिति, सुरक्षा संबंधी चिंताएं और संस्कृति पर निर्भर प्रतिबंध जैसी चुनौतियाँ लड़कियों की प्रगति को सीमित करती हैं। शहरी क्षेत्रों में बेहतर कुछ सुधार आ जाते हों, लेकिन ग्रामीण परिस्थितियों में संघर्ष अभी भी आवश्यक है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन के आधार पर स्पष्ट है कि लिंग एवं शिक्षा के बीच संबंध जटिल और बहुआयामी हैं। शिक्षा के प्रारम्भिक चरण में लड़कियों की भागीदारी अच्छी दिखती है, किंतु उच्च स्तर पर कमी स्पष्ट होती है।

शहरी–ग्रामीण विभेद, आर्थिक बाधाएँ और सांस्कृतिक मान्यताएँ, खासकर ग्रामीण लड़कियों के शैक्षिक मार्ग को नकारात्मक तरीके से प्रभावित करती हैं। यदि हम समान शिक्षा अवसर चाहें, तो नीतियों, जागरूकता और संरचनात्मक बदलाव की आवश्यकता है।

मुख्य निष्कर्ष

- प्राथमिक स्तर पर नामांकन में अंतर कम लेकिन उच्च शिक्षा में बहुत ज़्यादा।
- ग्रामीण लड़कियाँ बहुत असुरक्षित महसूस करती हैं, विशेष रूप से यात्रा और संस्कृति संबंधी कारणों से।
- पारिवारिक जिम्मेदारी ग्रामीण लड़कियों के लिए सामर्थ्य की सबसे बड़ी बाधा है।
- आर्थिक असमानता के कारण लड़कियाँ सबसे अधिक प्रभावित होती हैं।
- शहरी क्षेत्र में सुधार के पूर्वधारणा अच्छे हैं, किंतु ग्रामीण क्षेत्रों की ओर बढ़ते हुए ज्यादा हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

सुझाव

- ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालय बस तथा छात्रावास सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएं।
- मातृ शिक्षा जागरूकता कार्यक्रम एवं पालक–शिक्षक संवाद को बढ़ावा देना चाहिए।
- नीति स्तर पर लिंग–संवेदी बजट और वित्तीय सहायता योजनाएँ लागू की जानी चाहिए।
- सुरक्षा उपाय, विशेषतः लैट नाइट बस, महिला भावी शिक्षकों की तैनाती आवश्यक है।
- डिजिटल शिक्षा और ऑनलाइन लर्निंग को सशक्त बनाकर दूरदराज की लड़कियों को जोड़ा जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, एस., – कुमार, ए. (2022). बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ योजना का शैक्षिक प्रभाव. भारतीय महिला अध्ययन जर्नल, 18(2), 45–53.
2. दत्ता, ए., मिश्रा, पी., – खन्ना, आर. (2024). शिक्षा में लिंग समावेशनः एक पाठ्यक्रम विश्लेषण. सामाजिक शिक्षा समीक्षा, 12(1), 21–34.
3. सोमानी, प. (2022). लिंग समानता और शिक्षा का सामाजिक प्रभाव. जेंडर अध्ययन अंतरराष्ट्रीय पत्रिका, 9(3), 101–110.
4. नागी, के. एस., – श्रीदेवी, जी. (2022). शिक्षा में लिंग आधारित घरेलू व्यय का विश्लेषण. आर्थिक नीति एवं विकास, 7(4), 55–67.
5. सिंह, एस. पी., – कोमारैया, एस. (2023). ग्रामीण भारत में शिक्षा पर पारिवारिक निवेश और लिंग भेद. ग्रामीण शिक्षा पत्रिका, 10(2), 88–95.

6. मुग़ल, म. एम., – नसीर, स. (2025). प्राथमिक शिक्षा में लिंग विभाजनः भारत का परिदृश्य. शैक्षिक आवाज़, 11(1), 15–26.

7. वर्गीज़, एन. वी., – सबरवाल, एन. (2024). उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी. नई दिल्लीः उच्चतर शिक्षा आयोग प्रकाशन.

8. दास, ए., – सिंघल, के. (2021). गणितीय प्रदर्शन में लिंग आधारित अंतर. भारतीय गणित शिक्षा जर्नल, 5(2), 66–75.

9. कुमार, अ., – साहू, एस. (2024). विज्ञान शिक्षा में जाति और लिंग का संयुक्त प्रभाव. शिक्षा एवं समाज, 13(3), 77–89.

10. कादरी, म. (2022). पाठ्यपुस्तकों में लिंग प्रतिनिधित्व की समीक्षा. बाल शिक्षा शोध, 6(1), 29–36.

11. गोस्वामी, स., – शर्मा, वी. (2023). भारत में भौतिकी में लिंग समानता की स्थिति. विज्ञान शिक्षा विश्लेषण, 8(2), 101–111.

12. भट्टाचार्य, ए. (2023). डिजिटल शिक्षा में लिंग अंतरः ोम्ट रिपोर्ट के प्रकाश में. ग्रामीण शिक्षा संवाद, 9(3), 55–62.

13. वर्मा, र. (2024). लिंग समानता और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रभाव. शिक्षा नीति समीक्षा, 7(1), 39–47.

14. राव, एस. (2022). शिक्षा में लिंग संवेदनशीलताः शिक्षकों की भूमिका. शिक्षाशास्त्र शोध पत्रिका, 15(4), 20–28.

15. सैनी, के., – कौर, जी. (2023). उच्च शिक्षा संस्थानों में महिला नेतृत्व की स्थिति. महिला एवं विकास पत्रिका, 11(2), 91–100.

16. विश्वकर्मा, एल. (2021). भारत में लिंग असमानता के कारण और समाधान. समकालीन सामाजिक अध्ययन, 6(3), 44–52.

17. प्रकाश, आर. (2024). ग्रामीण लड़कियों की शिक्षा में आने वाली बाधाएँ. ग्रामीण महिला शिक्षा पत्रिका, 12(1), 37–45.

18. गुप्ता, पी., – राठी, एम. (2023). शिक्षा में लिंग आधारित नीति विश्लेषण. शिक्षा नीति शोध, 10(2), 70–80.

19. यादव, एन. (2022). शिक्षा और समाज में लिंग भूमिका की पुनर्व्याख्या. समाज एवं विचार, 14(1), 23–30.

20. खान, एफ. (2024). महिला शिक्षा और सरकारी योजनाएँः एक मूल्यांकन. नीति संवाद पत्रिका, 9(3), 61–72

❑❑❑